International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 07, July 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बालिकाओं के नैतिक मूल्यों के विकास पर अन्तर्मुखता–बहिर्मुखता का प्रभावः एक अध्ययन

प्रो. लक्ष्मेश्वर ठाकुर
अवकाशप्राप्त एसोसियेट प्रोफेसर (मनोविज्ञान
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

ज्योति, शोध छात्रा (शिक्षा)
शिक्षा संकाय, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय,मुजफ्फरपुर

सारः
सभी समाजों में उचित एवं अनुचित व्यवहारों के निर्धारण के लिए एक निश्चित नियमावली होती है। सभी बालक–बालिकाओं से यह अपेक्षा की जाती है कि वह इन नियमों को सीखकर उसी के अनुरूप व्यवहार करें। प्रत्येक संस्कृति में सामाजीकरण का महत्वपूर्ण कार्य विकासशील बालिकाओं में नैतिक मानकों और अच्छे समझे जाने वाले व्यवहारों के स्वरूप तथा व्यवहारिक उपयोगिता से अवगत कराना होता है। छोटी बच्चियों के व्यवहारों पर प्रारंभिक नियंत्रण एक बड़ी सीमा तक बाह्य सामाजिक तत्वों द्वारा स्थापित होता है। बालिकाओं में नैतिक मूल्यों का विकास तभी होता है जब उनमें पर्याप्त मात्रा में मानसिक क्षमताओं का विकास हो जाता है। मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में नैतिक मूल्यों के तीन आधारभूत तत्वों के विकास पर प्रकाश डाला गया है। ये तीन आधारभूत तत्व हैं– संज्ञानात्मक, व्यवहारात्मक एवं संवेगात्मक। फ्रायड का विश्वास है कि नैतिक व्यवहार और अपराध बोध की अनुभूति उस समय होती है जब बच्चे माता–पिता के प्रतिक्षित व्यवहारों से नैतिक मानक ग्रहण करते हैं। आइजेंक ने बहिर्मुखता का वर्णन करते हुए कहा है कि ऐसा व्यक्ति सामाजिक होता है, वह समूह में रहना चाहता है, दोस्त बनाता है, अनजान लोगों से भी बातचीत करना पसन्द करता है। अन्तर्मुखी व्यक्ति शान्त और शिथिल स्वभाव का होता है।

भूमिकाः बालिकाएँ समाज के प्रत्याशाओं के अनुरूप व्यवहार करना प्रत्यक्ष शिक्षण, प्रयत्न एवं भूल तथा तादात्मीकरण से सीखती है। इसमें प्रयत्न एवं भूल को छोडकर अन्य दो विधियाँ बहुत अधिक लोकप्रिय है। प्रत्यक्ष शिक्षण द्वारा बालिकाओं को यह समझाया जा सकता है कि क्या उचित है और क्या अनुचित तथा समाज की क्या प्रत्याषाएँ है। प्रत्यक्ष शिक्षण में यदि प्रशंसा, सामाजिक अनुमोदन, पुरस्कार जुड़ा हुआ होता है तो बालिकाओं पर प्रत्यक्ष शिक्षण का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।

यदि विद्यालय, परिवार, खेल–समूह और साथी–समूहों में नैतिक मूल्य सामान्य होते हैं तो बालिकाओं में इन नैतिक मूल्यों से संबंधित अमूर्त प्रत्यय शीघ्र निर्मित होते हैं। सामाजिक नैतिक मूल्यों के अधिगम में स्थानान्तरण के नियम भी कुछ परिस्थितियों में काम करते हैं। बालिकाएँ दूसरे बालिकाओं और प्रतिरूपों के व्यवहार प्रतिमानों का तादात्मीकरण भी करती हैं। इस संबंध में हरलॉक का विचार है कि– ''Identification as a source of learning moral behaviour becomes increasingly important as children grow older and rebel against discipline in the home and school.''

बालिकाओं में नैतिक मूल्यों का विकास तभी होता है जब उनमें पर्याप्त मात्रा में मानसिक क्षमताओं का विकास हो जाता है ताकि वह सीखे गए नैतिक मूल्यों का सामान्यीकरण कर सके। बहुत सारे अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि बालिकाओं में नैतिक मूल्यों से संबंधित पहले कुछ विशिष्ट प्रत्ययों का विकास होता है। लगभग नौ वर्ष की अवस्था तक बालिकाओं में नैतिक मूल्यों से संबंधित प्रत्यय अधिक सामान्यीकृत हो जाते है। किशोरावस्था के प्रारंभ होने तक बालिकाओं में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 07, July 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नैतिक मूल्यों का विकास पर्याप्त मात्रा में हो जाता है।

प्रत्येक संस्कृति में सामाजीकरण का महत्वपूर्ण कार्य विकासशील बालिकाओं में नैतिक मानकों और अच्छे समझे जाने वाले व्यवहारों के स्वरूप तथा व्यवहारिक उपयोगिता से अवगत कराना होता है। यद्यपि वांछनीय समझे जाने वाले विशिष्ट मूल्य एवं व्यवहार अलग–अलग संस्कृतियों में अलग–अलग होते हैं। सभी समाजों में उचित एवं अनुचित व्यवहारों के निर्धारण के लिए एक निश्चित नियमावली होती है। बालिकाओं से यह अपेक्षा की जाती है कि वह इन नियमों को सीखकर उसी के अनुरूप व्यवहार करें। साथ ही नियमों का पालन करने पर संतुष्टि और उल्लंघन करने पर अपराध बोध की अनुभूति करें।

छोटी बच्चियों के व्यवहारों पर प्रारंभिक नियंत्रण एक बड़ी सीमा तक बाह्य सामाजिक तत्वों

(प्रभावशाली व्यक्तियों की उपस्थिती अथवा दण्ड का भय) द्वारा स्थापित होता है। पर जैसे–जैसे उम्र बढ़ती है बच्चियों में आत्म नियंत्रण बढ़ता है जो उसमे व्यवहार के आन्तरिक मानकों द्वारा स्थापित होता है। नैतिक व्यवहार के आधारभूत तत्व के रूप में बाह्य तत्वों में व्यक्तिगत भावनाओं और नैतिक विश्वासों की ओर इस बदलाव को अभयन्तरीकरण कहा जाता है। बहुत सारे मनोवैज्ञानिक इस अभयन्तरीकरण को ही नैतिकता के विकास की प्रमुख प्रक्रिया मानते हैं।

मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में नैतिक मूल्यों के तीन आधारभूत तत्वों के विकास पर प्रकाश डाला गया है। ये तीन आधारभूत तत्व हैं– संज्ञानात्मक, व्यवहारात्मक एवं संवेगात्मक। इन तीनो तत्वों में पारस्परिक संबंधों या अभयन्तरीकरण की प्रक्रिया में इनकी भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया है। संज्ञानात्मक तत्वों के अन्तर्गत नैतिक मूल्यों के ज्ञान तथा अच्छे–बुरे के निर्णय को सम्मिलित किया जाता है। विभिन्न परिस्थितियों में नैतिक अवधारणाओं के अनुरूप किये गए वास्तविक व्यवहारों को व्यवहारात्मक तत्वों के अंतर्गत शामिल किया जाता है। अधिकांश अध्ययनों

में बालिकाओं के सामान्य व्यवहारो में जैसे– झूठ, चोरी, लालच, आक्रमकता, अयोग्यता आदि को शामिल किया गया है। इसके अंतर्गत कुछ सकारात्मक व्यवहारों को भी सम्मिलित किया गया है जैसे– सहयोग, परोपकार, सहायता, हिस्सेदारी इत्यादि। नैतिक मूल्यों के विकास में संवेगात्मक पक्षों के अध्ययनों में नकारात्मक पहलुओं पर भी ध्यान दिया गया है जैसे अपराध बोध संतुष्टि की तुलना में अधिक किया गया है।

फ्रायड का विश्वास है कि नैतिक व्यवहार और अपराध बोध की अनुभूति उस समय होती

है जब बच्चे माता–पिता के प्रतिक्षित व्यवहारों से नैतिक मानक ग्रहण करते हैं। नैतिकता को अलग–अलग हिस्सों में बाँटना सुविधाजनक है किन्तु वास्तविक जीवन में ये विभिन्न पहलू प्रायः एक साथ ही कार्य करते हैं। जब कभी भी नैतिक मूल्यों के संदर्भ में निर्णय लेना होता है तो सभी

तत्व मिलकर एक साथ अपना कार्य करते हैं।

आइजेंक (1959) ने बहिर्मुखता का वर्णन करते हुए कहा है कि ऐसा व्यक्ति सामाजिक होता है, वह समूह में रहना चाहता है, दोस्त बनाता है, अनजान लोगों से भी बातचीत करना पसन्द करता है। वह एकान्त प्रिय नहीं होता है, चुपचाप अध्ययन में रत रहना नहीं पसंद करता है। वह जीवन में नयापन चाहता है, छोटा जोखिम उठाने के लिए तैयार रहता है तथा दूसरों की बातों में भी अपने को सम्मिलित करना चाहता है। वह तत्क्षण समस्याओं का निर्णय लेता है। वह आवेगशील होता है। वह परिहासप्रिय होता है तथा समस्याओं के प्रति उसके उत्तर तैयार रहते हैं। वह चिन्तामुक्त होता है। जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखता है तथा सामान्यतः हँसता–खेलता जीवन बिताना चाहता है। वह समाज में हमेशा परिवर्त्तन चाहता है, मतान्तर होने पर वह आक्रामक भी हो उठता है तथा उसे तुरन्त क्रोध आ जाता है। ऐसा व्यक्ति अपने पर पूर्ण नियंत्रण नहीं रख सकता है और इसके व्यवहारों का पूर्व कथन संभव नहीं होता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 07, July 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दूसरी ओर, एक अन्तर्मुखी व्यक्ति शान्त और शिथिल स्वभाव का होता है। वह लोगों से कम मिलना चाहता है तथा स्वाध्याय में ही समय बिताता है। जीवन में सोच–समझकर ही कोई कदम बढ़ाता है तथा आवेग में कोई काम नहीं करता है। प्रत्येक काम को पूरी तत्परता एवं जवाबदेही के साथ ही पूरा करता है तथा कभी भी अक्रामक नहीं हो सकता है। वह विश्वसनीय होता है, धार्मिक मूल्यों के प्रति उसकी आस्था रहती है तथा कुछ निराशावादी प्रवृति रखता है।

प्राक्कल्पनाः इस पृष्ठभूमि में यह प्राक्कल्पना की जाती है कि "बहिर्मुखी माता–पिता की बालिकाओं में अर्न्तमुखी माता–पिता की बालिकाओं की अपेक्षा उच्च नैतिक मूल्य पायी जायेगा।"

क्षेत्रः इस अध्ययन में बिहार के मुजफ्फरपुर जिला अन्तर्गत विभिन्न महाविद्यालयों में स्नातक स्तर में अध्ययनरत बालिकाओं को सम्मिलित किया गया।

प्रतिदर्शः मुजफ्फरपुर जिला अन्तर्गत विभिन्न महाविद्यालयों में स्नातक स्तर में अध्ययनरत 500 छात्राओं को इस अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में सम्मिलित किया गया।

उपकरण एवं मापनीः व्यक्तित्व के अन्तर्मुखता–बहिर्मुखता आयाम को मापने के लिए आइजिंक 1959 के द्वारा निर्मित ई.पी.आई. का हिन्दी अनुवाद पटना विश्वविद्यालय शोध एवं सेवा संस्थान के द्वारा हिन्दी अनुवाद का चालन किया गया।

प्रविधिः शोध अध्ययन में आवश्यकतानुसार विभिन्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया।

उच्चतम–निम्नतम समूह तुलना विधिः

(क) उपर्युक्त स्वतंत्र परिवर्त्यों के पृथक–पृथक उच्चतम समूह एवं निम्नतम समूहों का निर्धारण उनके प्रथम चतुर्थांश प्राप्तांकों तथा तृतीय चतुर्थांश प्राप्तांकों को विभाजक बिन्दु मानकर किया गया। इस आधार पर प्रत्येक स्वतंत्र परिवर्त्य के दो–दो समूह निर्धारित किए गये। प्रत्येक के इन दोनों ही समूहों की बालिकाओं के नैतिक विकास एवं माता–पिता की अभिवृति प्राप्तांकों के मध्यमानों के अंतरों की सार्थकता जाँच टी. अनुपात परीक्षण विधि के आधार पर किया गया।

(ख) प्रत्येक स्वतंत्र परिवर्त्यों तथा बालिकाओं के नैतिक विकास एवं माता–पिता की अभिवृति प्राप्तांकों के बीच सार्थक सह–संबंध गुणांक प्राप्त किया गया।

(ग) प्रसरण विश्लेषण विधि– सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं आवासीय स्थिति से संबंधित चरों को मापने के लिए बालिकाओं के नैतिक विकास एवं माता–पिता की अभिवृति के आधार पर तीन समूहों के बालिकाओं से प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमानों के आपसी अंतरों तथा उनके अंतरक्रिया की जाँच प्रसरण विश्लेषण परीक्षण के आधार पर किया गया।

(घ) प्रोडक्ट मोमेन्ट सह–संबंध विधि–बालिकाओं के नैतिक मूल्य के विकास में माता–पिता की अभिवृति का प्रभाव के बीच संबंध को जाँचने के लिए प्रोडक्ट–मोमेन्ट सह–संबंध विधि का प्रयोग किया गया।

परिणामः बहिर्मुखता–अन्तर्मुखता तथा बालिकाओं में नैतिक मूल्यों के विकास के सम्बन्ध में यह प्राक्कल्पना की गई थी कि 'बहिर्मुखी बालिकाओं में अन्तर्मुखी बालिकाओं की अपेक्षा उच्च नैतिक मूल्य पाई जायगी।' पाँच सौ बालिकाओं के प्रतिदर्श पर बहिर्मुखी–अन्तर्मुखी प्रश्नावली का चालन किया गया। प्रतिदर्श के प्राप्तांकों के आधार पर तृतीय चतुर्थांश से ऊपर (उच्चत्तम पचीस प्रतिशत) तथा प्रथम चतुर्थांश से नीचे (निम्नतम पच्चीस प्रतिशत) के समूहों को क्रमशः बहिर्मुखी समूह तथा अन्तर्मुखी समूह माना गया। इन दोनों ही समूहों में सांख्यिकीय गणना के आधार पर प्रयोज्यों की संख्या 118 तथा 125 निर्धारित हुई। इस मापनी के आधार पर निम्नतम प्राप्तांक शून्य तथा उच्चतम प्राप्तांक चौबीस की संभावना है, जिसमें वर्त्तमान प्रतिदर्श का निम्नतम प्राप्तांक तीन तथा उच्चतम प्राप्तांक उन्नीस प्राप्त हुआ है। इसका प्रथम चतुर्थांश 7.70 तथा तृतीय चतुर्थांश 11.75 है। इन दोनों ही बहिर्मुखी–अन्तर्मुखी समूहों के माता–पिता की मनोवृत्ति प्राप्तांकों के वितरण के मध्यमान,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 07, July 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रमाणिक विचलन एवं टी–अनुपात का तुलनात्मक अध्ययन नीचे सारणी संख्या–1 में वर्णित है।

सारणी संख्या–1

अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी समूहों के बालिकाओं में नैतिक मूल्यों के विकास का तुलनात्मक विवेचन

बालिकाओं में नैतिक मूल्यों का विकास	बहिर्मुखी	अन्तर्मुखी
संख्या	125	118
मध्यमान	22.6	17.8
प्रमाणिक विचलन	10.6	7.2
मध्यमान की प्रमाणिक त्रुटी	0.92	0.69
मध्मानों का अंतर	4.80	
मध्मानों के अंतर की प्रमाणिक त्रुटि	0.113	
टी–अनुपात	4.2	
डी.एफ.	241	
सार्थकता स्तर	0.01	

ऊपर वर्णित सारणी में दोनों ही समूहों के बालिकाओं के नैतिक मूल्यों एवं व्यक्तित्व के अन्तर्मुखता–बहिर्मुखता चर के तुलनात्मक विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि बहिर्मुखी समूह के बालिकाओं में नैतिक मूल्यों के प्रति प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 22.6 तथा अन्तर्मुखी समूह से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 17.8 प्राप्त हुआ है। दोनों ही समूहों का टी–अनुपात 4.2 है, जो 241 डी. एफ. के लिए 0.01 स्तर पर सार्थक प्रमाणित हो रहा है। अतः यह निष्कर्ष लिया जा सकता है कि तृतीय अध्याय में वर्णित प्राक्कल्पना, जिसमें बालिकाओं के बहिर्मुखी समूह में उच्च नैतिक मूल्य तथा अर्न्तमुखी में निम्न नैतिक मूल्य पाये जाने की प्राक्कल्पना की गई थी जो सत्य प्रमाणित हुई। प्रतिदर्श के बहिर्मुखी–अन्तर्मुखी प्राप्तांक (प्रतिदर्श संख्या पाँच सौ) तथा नैतिक मूल्यों के विकास (प्रतिदर्श संख्या पाँच सौ) प्राप्ताकों के बीच प्रोडक्ट मोमेन्ट सह–संबंध विधि के द्वारा अध्ययन किया गया। इस जाँच के आधार पर दोनों ही चरों के बीच 0.412 सह–सम्बन्ध गुणांक प्राप्त हुआ जो 498 डी.एफ. के लिए 0.01 स्तर पर सार्थक प्रमाणित होता है। यह सह–सम्बन्ध गुणांक दोनों ही चरों के बीच घनात्मक घनिष्ट सम्बन्ध को प्रदर्शित करता है (गैरेट, 1955 सारणी जे, पेज 439)।

निष्कर्षः व्यक्तित्व के बहिर्मुखता–अन्तर्मुखता चर के सम्बन्ध में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर किए गए प्राक्कल्पना से सम्बन्धित निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैंः–

(क) अन्तर्मुखी बालिकाओं की अपेक्षा बहिर्मुखी बालिकाओं में नैतिक मूल्यों का विकास अधिक अनुकूल पायी गयी है।

(ख) अन्तर्मुखता–बहिर्मुखता तथा बालिकाओं के नैतिक मूल्यों के बीच उच्च एवं सार्थक सह–सम्बन्ध पायी गयी है।

(ग) व्यक्तित्व के अन्तर्मुखता–बहिर्मुखता चर का जनसंख्या में सामान्य वितरण प्रमाणित होता है।

(घ) बालिकाओं में नैतिक मूल्यों के विकास को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि सभी बालिकाओं में नैतिक मूल्यों का विकास समान रूप से नहीं पाई जाती है।

इस प्रकार, यह पाया गया है कि बालिकाओं के नैतिक मूल्यों के विकास पर अन्तर्मुखता–बहिर्मुखता चर का अत्यधिक प्रभाव होता है।

Reference

1. Anderson, N. N. and Butzin, C. A. (1978). 'Integration Theory Applied to Children's Judgment of Equity', *Development Psychology*.
2. Docety, J. Michalski, K. J. & Kinzler, K. D. (2012). The contribution of emotion and cognition to moral sensitivity: A neurodevelopmental study. Cerebral Cortex, 22, 209 - 220.
3. Doherty (2007). Ensuring the Best Start Life Targeting Universality in Early Childhood Development. Quebec: Institute for Research on Public Policy.
4. Eysenck, H. J. (1959). Eysenck Personality Inventory, Holder and Stoughton Limited, Sevenoks, Kent, Brown Knight & Truscott Ltd., London.
5. Hurlock, Elizabeth, B.: *Child Development,* McGraw Hill Book Company, New York & London.
6. Gessel, A. (1940). *Child Development*, Harper Brothers, New York.
7. Guilfred, J. P.: Fundamental Statistics in Psychology and Education, (4th) McGraw Hill, New York.
8. Kuppuswamy, B. (1983). A Text Book of Child Behaviour and Development, Vikas Publishing House, Delhi.
9. Rashmi (2019). In Investigation of the Influence of Family Environment on Child Development a Comparative Study of Urban and Rural Children of Chapra District A Thesis of B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur.